ड्रैगन फ्रूट

अधिक जानकारी के लिए संपर्क:
82 7373 3030/82 7373 3535

क्षेत्रफल: 23 गुंठे
प्रजातियाँ: जम्बो रेड, C, वियतनाम यलो, व्हाइट
रोपाई का अंतर: 8 x 7 फीट
पौधों की संख्या: 430
लागवड पद्धति: रेज्ड बेड (गादी वाफा)
रोपण काल: 18 जून 2025

जलवायु और मिट्टी: ड्रैगन फ्रूट गर्म और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह से बढता है। यह अत्यधिक ठंड या पाले को सहन नहीं करता। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में इसकी खेती लाभदायक होती है। हल्की से मध्यम और अच्छे जलनिकासी वाली रेतीली मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त होती है। मिट्टी का pH 5.5 से 7.0 के बीच होना चाहिए।

लागवड पद्धति: 20-25 सेमी लंबे तनों की कटिंग या अच्छे रोपों का चयन कर लगाना चाहिए। रोपाई का अंतर 8 x 6 फीट या 8 x 7 फीट रखा जाना चाहिए। यदि सिंचाई की सुविधा हो तो बहुत गर्म महीनों को छोड़कर वर्षभर कभी भी रोपण किया जा सकता है। रोपण से पहले सहारा देने के लिए (सीमेंट या लकड़ी के खंभों का) स्ट्रक्चर बनाना आवश्यक है।

उर्वरक प्रबंधन: रोपण से पहले खेत में गोबरखत या कंपोस्ट देना चाहिए। रोपण के बाद फसल की अवस्था के अनुसार रासायनिक व जैविक उर्वरकों का नियमित रूप से उपयोग करना चाहिए।

पानी का प्रबंधन: ड्रैगन फ्रूट को बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है। ठंड व गर्मियों के मौसम में नियमित सिंचाई करना लाभदायक होता है। ड्रिप सिंचाई का उपयोग करें और एक साथ अधिक पानी न दें।

फलों का लगना: रोपण के 18 से 22 महीनों के बाद फल लगना शुरू होता है।

उत्पादन: यदि बाग की देखभाल और नियोजन अच्छे से किया जाए तो दूसरे वर्ष से फूल और फल दिखने लगते हैं, लेकिन व्यावसायिक उत्पादन तीसरे वर्ष से शुरू होता है।

तोडणी: फलों की तुड़ाई तब करनी चाहिए जब वे पूरी तरह से पक जाएं। जब फल गुलाबी या पीले रंग के हो जाएं, तब वे तुड़ाई के लिए तैयार होते हैं।

कीट व रोग: ड्रैगन फ्रूट के बागों में कीट व रोगों का प्रकोप बहुत कम होता है। फिर भी स्टेम कैंकर, एन्थ्रेक्नोज, स्टेम रॉट और रूट रॉट जैसे फफूंदजन्य रोग देखने को मिलते हैं। फलों की मक्खी, मिलीबग और स्केल कीट भी कभी-कभी दिखाई देते हैं।